# बिहार की कृषि प्रवृत्ति : एक अध्ययन

**स्मिता प्रियदर्शिनी**

शोध छात्रा,
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

**सारांश –**

*बिहार की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि एवं कृषि पर आधारित उद्योग है। है। विगत दो दशकों में सिंचाई की सुविधा के विकास के साथ–साथ वैज्ञानिक ढ़ंग से कृषि शुरू हो चुकी है तथा व्यवसायिक फसलों का उत्पादन काफी तेजी से बढ़ा है। बिहार की कृषि उत्पादन को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है। प्रथम खाद्यान्न फसलों का उत्पादन एवं द्वितीय अखाद्यान्न फसलों का उत्पादन। राज्य के संपूर्ण कृषि जोतों का करीब चालीस प्रतिशत भाग था। यथा वैशाली में करीब अड़तालीस प्रतिशत (48 प्रतिशत) एवं समस्तीपुर में करीब बत्तीस प्रतिशत (32 प्रतिशत) भू–भाग इसके अर्न्तगत था। अन्य महत्वपूर्ण जिलों में मुजफ्फरपुर (8.38 प्रतिशत), गोपालगंज (1.09 प्रतिशत), एवं उत्तरी–पश्चिमी मैदानी भाग में पूर्णिया (4.15 प्रतिशत), बेगूसराय (1.21 प्रतिशत) था। 1977–91 के बीच वृद्धि का रूझान उत्तरी–पश्चिमी मैदानी भागों में 2.42 प्रतिशत था। जो सकारात्मक था एवं दूसरी ओर पूर्वी मैदानी भागों में यह नकारात्मक था (–3.18 प्रतिशत)। बिहार में प्रति एकड़ तम्बाकू का उत्पादन उत्साहवर्धक था। 1970–71 में यह उत्पादन 890 किलोग्राम/हेक्टेयर था। सबसे अधिक उत्पादन 1270 किलोग्राम/हेक्टेयर 1987–1988 में दर्ज हुआ। बाद के वर्षों में 1992–93 तक उत्पादन में लगातार ह्रास देखने को मिलता है जो इस वर्ष मात्र 570 किलोग्राम/ हेक्टेयर के स्तर पर पहुँच गया।*

***कुंजी** : फसल, कृषि, मैदानी भाग, उत्पादन, व्यवसाय*

## प्रस्तावना

बिहार की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि एवं कृषि पर आधारित उद्योग है। अनुमानतः दो तिहाई लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि ही है। यहीं कारण है कि बिहार जैसे आर्थिक रूप से पिछड़े हुए राज्य में मौसमी बेरोजगारी सबसे ज्यादा दृष्टिगोचर होती है। यहाँ कृषि की प्रधानता का मुख्य कारण यह है कि संपूर्ण भू–क्षेत्र के बड़े भाग पर गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित उर्वर मैदान का विकसित होना है। अनुकूल भूमि की दशा, जलवायु, सिंचाई की सुविधा एवं वर्षा की पर्याप्तता आदि कारकों ने बिहार जैसी अर्द्ध–विकसित अर्थव्यवस्था को लोगों के जीवन–यापन का मुख्य स्रोत बना दिया है। बिहार में कृषि की प्रधानता सबसे अधिक उत्तर गंगा के मैदानी इलाकों में देखी जा सकती है। यहाँ 65 से 80 प्रतिशत भू–भाग पर कृषि कार्य किया जाता है। उत्तर बिहार के गण्डक एवं कोसी के मैदानी भागों में सघन कृषि के अर्न्तगत प्रतिवर्ष चार फसलें बोई जाती है। इस क्षेत्र में शरद् काल में भदई, बसन्त काल में रब्बी या जायद, ग्रीष्म काल में गरमा फसलें उपजाई जाती है।

बिहार की कृषि अभी भी पारंपरिक हीं है। विगत दो दशकों में सिंचाई की सुविधा के विकास के साथ–साथ वैज्ञानिक ढ़ंग से कृषि शुरू हो चुकी है तथा व्यवसायिक फसलों का उत्पादन काफी तेजी से बढ़ा है। बिहार की कृषि उत्पादन को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है। प्रथम खाद्यान्न फसलों का उत्पादन एवं द्वितीय अखाद्यान्न फसलों का उत्पादन। खाद्यान्न फसलों के उत्पादन के अर्न्तगत सर्वप्रथम चावल की फसल है जिसकी जोत का क्षेत्रफल बिहार में सबसे ज्यादा है। यहाँ पर चावल की दो किस्में बोई जाती है जो गरमा एवं भदई के नाम से जानी जाती है।

चावल का उत्पादन 1950–51 में 26.44 लाख टन था जो 1990–91 में बढ़कर 65.63 लाख टन हो गया जो 246 प्रतिशत था वहीं दूसरी ओर संपूर्ण राष्ट्रीय उत्पादन 1951 में 305.8 लाख टन से बढ़कर 745.9 लाख टन हो गया जो 362 प्रतिशत था। 1993–94 में चावल का उत्पादन 60.63 लाख टन था जबकि संपूर्ण भारत का उत्पादन 790.48 लाख टन था। यद्यपि सामान्य रूप से चावल के उत्पादन में वृद्धि होती रही लेकिन यह वर्ष–प्रतिवर्ष उतार–चढ़ाव दर्शाता रहा।

**तालिका – 1**

**(डायमेन्सेस ऑफ डेवलपमेन्ट–वाल्यूम एक) चावल का उत्पादन**

| वर्ष | उत्पादन (लाख टन में) | प्रतिशत में उत्पादन (भारत में) | खाद्यान्न बिहार का उत्पादन | भारत में स्थान |
|---|---|---|---|---|
| 1950 | 26.44 | 12.08 | 58.5 | 4th |
| 1955-56 | 27.29 | 9.90 | 48.5 | |
| 1960-61 | 45.45 | 13.01 | 61.2 | |
| 1965-66 | 42.63 | 13.00 | 63.0 | |
| 1966-67 | 14.73 | 4.84 | 40.6 | |
| 1970-71 | 41.54 | 9.83 | 52.8 | |
| 1975-76 | 48.55 | 9.00 | 52.9 | 4th |
| 1980-81 | 56.35 | 10.05 | 56.8 | 3th |
| 1985-86 | 60.63 | 9.05 | 55.2 | 4th |
| 1990-91 | 65.63 | 8.08 | 53.4 | 4th |
| 1962-63 | 42.13 | 13.04 | 58.2 | 2nd |
| 1964-65 | 39.24 | 14.00 | - | 3rd |
| 1967-68 | 45.40 | 10.43 | 53.28 | 2nd |
| 1974-75 | 30.60 | 11.47 | 55.02 | 3rd |
| 1982-83 | 30.40 | 6.58 | 43.93 | 7th |
| 1983-86 (Av.) | 54.67 | 9.00 | - | |
| 1986-87 | 60.44 | 9.98 | 55.39 | 4th |
| 1989-90 | - | 7.08 | - | |
| 1990-91 | - | 6.07 | - | |
| 1993-94 (P) | 60.63 | 7.67 | 47.61 | 7th |

स्रोत :– डायमेन्सेन्स ऑफ डेवलपमेन्टः एग्रीकल्चर वाल्यूम–1 केदार नाथ प्रसाद

1950–51 में बिहार में संपूर्ण राष्ट्रीय उत्पादन का 12.8 प्रतिशत धान का उत्पादन हुआ जो 1990–91 में घटकर 8.8 प्रतिशत रह गया तथा 1993–94 में यह मात्र 7.67 प्रतिशत हो गया। 1965–66 से लेकर 1982–83 के काल में अधिकतम उत्पादन 56.35 लाख टन (1980–81) एवं न्यूनतम उत्पादन 30.60 लाख टन (1982–83) रहा। यानि दोनों के बीच का अन्तर 25.75 लाख टन था जिसका अर्थ है कि उत्पादन में उतार–चढ़ाव 45 प्रतिशत का रहा। 1984–85 से 1993–94 के बीच अधिकतम उत्पादन 1990–91 में 65.63 लाख टन था तथा न्यूनतम उत्पादन 1987–88 में 46.47 लाख टन था यानि 18.89 लाख टन का फर्क रहा जो यह संकेत करता है कि उत्पादन में उतार–चढ़ाव 8.9 प्रतिशत रहा।

**तालिका–2**

| **चावल उत्पादन :– रूझान** | |
|---|---|
| 1965–66 से लेकर 1982–83 तक | 1984.85 से लेकर 1993.94 तक |
| वर्षों की संख्या<br>वृद्धि – 09<br>गिरावट–09 | वर्षों की संख्या<br>वृद्धि – 05<br>गिरावट– 05 |

स्रोत :. डायमेन्सन्स ऑफ डेवलेपमेन्टः एग्रीकल्चर केदार नाथ प्रसाद

उत्पादन में वृद्धि एवं ह्रास के वर्ष दोनों ही कालों में समान रहे लेकिन अपवाद स्वरूप कुछ वर्षो में चावल के उत्पादन में बिहार का स्थान राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा या तीसरा रहा। इसके विपरीत 1950–51 से 1990–91 के बीच सामान्य रूप से बिहार का स्थान पहला से चौथा रहा इतना ही नहीं 1993–94 में इसका स्थान घटकर सातवाँ हो गया जो 1982–80 से 1988–89 के दौरान भी रहा। चावल के उत्पादन में वृद्धि की दर बिहार में 1979–80 से 1988–89 के बीच अधिकतम रही। चावल उत्पादन के दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि ऐसे भौगोलिक क्षेत्र एवं जिले जहाँ वर्षा की मात्रा सामान्य है या जहाँ सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं वहाँ विगत दो दशकों में प्रति एकड़ उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में हाइब्रिड बीजों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया है। इन जिलों में अपेक्षाकृत अच्छे परिणाम आये हैं जहाँ सिंचाई के साधनों की उपलब्धता के फलस्वरूप प्रकृति का प्रकोप (सूखा, मानसून की अनियमितता) का असर बहुत कम हो गया है। इसके साथ ही सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों यथा विस्तार सेवायें, कृषि की वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग, कृषि ऋणों का विस्तार इत्यादि के फलस्वरूप उत्पादन में बढ़ोत्तरी दर्ज हुई है।

विगत दो–तीन दशकों में बिहार ने गेहूँ के उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। यद्यपि गेहूँ के उत्पादन में सामान्य रूझान वृद्धि के रहे है लेकिन इसके उत्पादन में वर्ष–प्रतिवर्ष उतार–चढ़ाव देखने को मिलते है जिसे तालिका 5.9 में दर्शाया गया है :–

**तालिका–3**
**गेहूँ का उत्पादन**

| वर्ष | उत्पादन (लाख/टन में) | प्रतिशत | | भारत में स्थान | वृद्धि दर (प्रतिशत में) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | राज्य के कुल उत्पादन में | भारत के कुल उत्पादन में | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 1950-51 | 2.57 | 5.7 | 3.8 | 6th | 3.28 |
| 1955-56 | 3.57 | 6.3 | 4.0 | 5th | 3.54 |
| 1960-61 | 4.43 | 5.9 | 4.6 | | 2.52 (C) |
| 1961-71 | 4.90 | | 4.0 | | 11.6 |
| 1965-66 | 4.78 | 6.6 | 4.6 | | 11.7 |
| 1966-67 | 3.65 | 10.0 | 3.2 | | - |
| 1967-68 | 9.14 | 12.4 | 5.5 | | - |
| 1969-70 to 1978-79 | 12.59 | 16.0 | 4.6 | 5th | 6.1 |
| 1980-81 to 1982-83 | 22.97 | 31.61 | 5.14 | 6th | 2.3 |
| 1984-85 | 30.32 | 34.06 | 6.88 | | |
| 1985-86 | 30.55 | 38.11 | 6.5 | | |
| 1984-87 | 29.82 | 32.80 | 6.5 | | |
| 1987-88 | 35.57 | 30.41 | 7.05 | | |
| 1988-89 | 32.70 | 27.63 | 8.6 | | |
| 1989-90 | 35.60 | 28.9 | 6.56 | | |
| 1990-91 | 35.94 | 33.78 | 6.3 | 6th | |
| 1991-92 | 34.49 | 37.97 | 6.02 | | |
| 1992-93 | 43.23 | 33.95 | 7.31 | | |

स्रोत :. डायमेन्सन्स ऑफ डेवलेपमेन्टः एग्रीकल्चर केदार नाथ प्रसाद

1950–51 से 1990–91 के बीच गेहूँ के उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। इसका उत्पादन क्रमशः 2.57 लाख टन से 35.60 लाख टन हो गया है जो करीब चौदह सौ प्रतिशत (1400 प्रतिशत) है। इसी काल में राष्ट्रीय

उत्पादन 64.6 लाख टन से बढ़कर 545.2 लाख टन हो गया है जो 844 प्रतिशत है। 1993–94 में यहाँ गेहूँ का उत्पादन 43.23 लाख टन था जबकि राष्ट्रीय उत्पादन 591.31 लाख टन था।

1950–51 में बिहार की भागेदारी राष्ट्रीय उत्पादन का 3.8 प्रतिशत थी जो 1990–91 में बढ़कर 6.5 प्रतिशत हो गया। यदि गेहूँ के उत्पादन में हुए उतार–चढ़ाव को देखा जाए तो 1980–81 में उत्पादन 28.35 लाख टन था जो अधिकतम था जबकि 1965–66 में उत्पादन मात्र 4.78 लाख टन था जो न्यूनतम था। इस उतार–चढ़ाव को प्रतिशत में व्यक्त करने पर तिरासी (83 प्रतिशत) के आस–पास आता है। 1983–84 से लेकर 1993–94 के दौरान उत्पादन अधिकतम रहा जिसमें सबसे अधिक उत्पादन 1993–94 में हुआ जो 43.23 लाख टन था एवं न्यूनतम उत्पादन 28.61 लाख टन था जो 1986–87 में दर्ज हुआ। यह उतार–चढ़ाव लगभग चौंतीस प्रतिशत है जिसे तालिका 4 मे दर्शाया गया है उपरोक्त दोनों कालों में उत्पादन में उतार–चढ़ाव का प्रतिशत बाद के वर्षों में अपेक्षाकृत कम पाया गया। बिहार में 1967–68 का वर्ष गेहूँ के उत्पादन में क्रांति का वर्ष था जिसे हरित क्रांति के प्रसार के रूप में देखा जा सकता है।

**तालिका–4**

**गेहूँ उत्पादन दर**

| 1965–66 से लेकर 1982–83 तक | 1984–85 से लेकर 1993–94 तक |
|---|---|
| वृद्धि के वर्ष – 13<br>ह्रास के वर्ष – 05 | वृद्धि के वर्ष – 06<br>ह्रास के वर्ष – 04 |

स्रोत : डयमेन्सन्स ऑफ डेवलेपमेन्ट एग्रीकल्चर

गेहूँ के उत्पादन में 1950–51 से 1965–66 के दौरान सामान्य वृद्धि रही जिसका प्रमुख कारण प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्धि तथा क्षेत्रफल में कृषि जोतों का विस्तार था। 1967–68 से 1977–78 के बीच उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई जिसके प्रमुख कारण नई वैज्ञानिक कृषि तकनीकों एवं उन्नत बीजों का बड़े पैमाने पर उपयोग तथा साथ ही कृषि जोतों का विस्तार भी था। यही वह काल था जब बिहार में लारमा, रोजो, काला सोना, अर्जुन सोना, बीजों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया जिसके फलस्वरूप उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज हुई। 1970–73 से 1986–89 के बीच उत्पादकता वृद्धि पर जोर दिया गया जो क्षेत्र वृद्धि की तुलना में 1.3 गुणा अधिक था।

अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि समय पर बोआई, उन्नत बीजों का प्रयोग, लम्बे समय तक कम तापमान, सूखी पछुआ पवन का कम प्रभाव, सितम्बर के अन्तिम सप्ताह की वर्षा आदि कारकों ने गेहूँ के उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। चावल के उत्पादन की तुलना में बिहार में गेहूँ के उत्पादन में ज्यादा स्थिरता आई है। साथ ही यह देखा गया कि प्रधान रूप से चावल उत्पादक जिलों की तुलना में गेहूँ उत्पादक जिलों मे किसानों की आमदनी अपेक्षाकृत बढ़ी है।

मक्का बिहार का एक प्रमुख फसल है। यहाँ प्रति वर्ष करीब बारह लाख टन मक्के का उत्पादन होता है। 1950–51 में यहाँ 3.30 लाख टन मक्के का उत्पादन हुआ जो 1990–91 में बढ़कर 10.6 लाख टन हो गया (जो लगभग 320 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।) इसी काल में राष्ट्रीय उत्पादन 17.3 लाख टन से बढ़कर 90.7 लाख टन हो गया। यह वृद्धि 524 प्रतिशत की रही। बिहार में संपूर्ण खाद्यान्न उत्पादन का करीब 7.4 प्रतिशत भाग मक्का से प्राप्त होता था। (1950–51 के आँकड़ो के अनुसार) दूसरी ओर 1966–67 में जो फसलों के उत्पादन की दृष्टि से सबसे खराब वर्ष था, वहाँ मक्के का अधिकतम उत्पादन (19.4 प्रतिशत संपूर्ण खाद्यान्न उत्पादन का) हुआ।

तालिका–5

मक्के का उत्पादन

| वर्ष | उत्पादन लाख/टन में | प्रतिशत | | भारत में स्थान |
|---|---|---|---|---|
| | | बिहार में उत्पादन | संम्पूर्ण भारत में उत्पादन | |
| 1950-51 | 3.31 | 7.4 | 19.1 | 2nd |
| 1955-56 | 2.98 | 5.3 | 11.4 | 2nd |
| 1960-61 | 8.21 | 11.0 | 20.1 | 2nd |
| 1965-66 | 7.57 | 10.4 | 15.7 | |
| 1966-67 | 9.49 | 19.4 | 19.4 | |
| 1970-71 | 11.13 | 14.1 | 14.8 | 3rd |
| 1975-76 | 9.39 | 10.2 | 12.9 | 2nd |
| 1980-81 | 8.69 | 8.7 | 12.4 | 2nd |
| 1985-86 | 8.77 | 8.0 | 13.0 | 3rd |
| 1990-91 | 10.60 | 8.6 | 11.6/13.2 | 4nd |

स्रोत :. डायमेन्सन्स ऑफ डेवलेपमेन्टः एग्रीकल्चर

इसके उपरान्त इसके उत्पादन के ह्रास देखने को मिलते है। यद्यपि इस काल में अन्तिम वर्षों में उत्पादन में अच्छी वृद्धि रही। एक ओर जहाँ 1950–51 में संपूर्ण फसलों के उत्पादन में मक्के का स्थान दूसरा था सर्वोच्च उत्पादन के वर्षों में इसका स्थान तीसरा हो गया। आज भी यह उत्पादन की दृष्टि से तीसरे स्थान पर है। दूसरी ओर 1950–51 में राष्ट्रीय स्तर पर इसका स्थान दूसरा था जो 1974–75 में तीसरा हो गया एवं अन्त में 1990–91 में चौथा हो गया बिहार में 1965–66 से 1982–83 के बीच अधिकतम उत्पादन 11.13 लाख टन था जबकि न्यूनतम उत्पादन 1.33 लाख टन रहा जिसका अन्तर 9.80 लाख टन है तथा प्रतिशत में अन्तर 88 (अठठासी) था। जहाँ तक विभिन्न मौसमों में फसल के उत्पादन का सवाल है गरमा फसल अधिक महत्वपूर्ण है। बिहार में मक्के का उत्पादन राष्ट्रीय स्तर की तुलना में धीमा रहा है। प्रथम तीन योजना कालों में इसकी वृद्धि सामान्य रही है जबकि बाद के योजना कालों में यह संतोषजनक नहीं रहा है एवं चौथी पंचवर्षीय योजना में इसके उत्पादन में काफी गिरावट दर्ज की गई।

1950–51 से लेकर 1965–66 के बीच उत्पादन वृद्धि में ह्रास का कारण मुख्य रूप से इसके कृषि जोतों में कमी एवं साथ ही उत्पादकता वृद्धि में कमी महत्वपूर्ण पहलू थें। यही स्थिति 1967–68 से 1977–78 के बीच रही क्योंकि उपरोक्त कारकों ने नकरात्मक वृद्धि को जारी रखा। दलहन की खेती में बिहार प्रमुख स्थान रखता है। 1950–51 में यहाँ 10.16 लाख टन दलहन का उत्पादन हुआ जो संपूर्ण राष्ट्रीय उत्पादन का करीब बारह प्रतिशत था एवं बिहार के संपूर्ण खाद्यान्न उत्पादन का तेइस (23 प्रतिशत) था।[11] 1990–91 में उत्पादन 9.2 लाख टन रह गया जो राष्ट्रीय उत्पादन का 6.5 प्रतिशत एवं बिहार के संपूर्ण खाद्यान्न उत्पादन का 7.5 प्रतिशत था। एक ओर जहाँ बिहार मे दलहन के उत्पादन में 9.5 प्रतिशत का ह्रास देखने को मिला वहीं राष्ट्रीय उत्पादन में सरसठ (67 प्रतिशत) प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई जिसे तालिका– 6 में दर्शाया गया है।

तालिका–6

| वर्ष | उत्पादन लाख/टन में | प्रतिशत | | भारत में स्थान |
|---|---|---|---|---|
| | | बिहार में उत्पादन | संम्पूर्ण भारत में उत्पादन | |
| 1950-51 | 10.16 | 22.8 | 12.08 | 5th |
| 1960-61 | 11.70 | 15.7 | 9.21 | 5th |
| 1965-66 | 12.62 | 17.4 | 12.7 | |
| 1966-67 | 5.38 | 14.8 | 6.44 | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1970-71 | 9.87 | 12.5 | 8.35 | |
| 1975-76 | 8.22 | 8.95 | 6.30 | 5th |
| 1980-81 | 8.33 | 8.4 | 7.83 | 5th |
| 1985-86 | 9.02 | 8.2 | 6.75 | |
| 1990-91 | 9.20 | 7.5 | 6.54 | 6th |
| 1993-94 | 7.54 | 6.0 | 5.75 | |

स्रोत :– डायमेन्सन्स ऑफ डेवलमेन्टः एग्रीकल्चर

दलहन के उत्पादन में काफी उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है। 1965–66 एवं 1982–83 के बीच अधिकतम एवं न्यनूतम उत्पादन का अन्तर 6.27 लाख टन था जो करीब उन्चास (49 प्रतिशत) है। 1984–85 एवं 1993–94 के बीच यह उतार–चढ़ाव 2.22 लाख टन का था जो करीब पच्चीस (25) प्रतिशत था। दलहन उत्पादन में तुलनात्मक रूप से बिहार का स्थान उपरोक्त काल के प्रारंभिक वर्षों में पाँचवें से घटकर छठे स्थान पर पहुँच गया। इसके उत्पादन में सबसे ज्यादा ह्रास 1977–78 से 1982–83 के बीच हुआ। जिसका प्रमुख कारण विकास दर में अत्यधिक गिरावट थी। बिहार के प्रमुख दलहन फसलों में चना, मसूर, मूँग, अरहर, मटर एवं खेसारी है। जो प्रमुख रूप से रवी फसलों के अर्न्तगत आते है।

**तालिका–7**

**तिलहन उत्पादन**

| वर्ष | उत्पादन लाख/टन | प्रतिशत संपूर्ण भारत में | भारत में स्थान |
|---|---|---|---|
| 1961-62 | 0.91 | 1.33 | 10th |
| 1962-63 | 0.96 | 1.42 | 10th |
| 1970-71 | 1.14 | 1.18 | |
| 1975-76 | 1.48 | 1.40 | |
| 1980-81 | 1.10 | 1.17 | 13th |
| 1986-87 | 1.24 | 1.10 | |
| 1988-89 | 1.19 | 0.66 | |
| 1989-90 | | 0.80 | |
| 1990-91 | 1.49 | 0.80 | |
| 1992-93 | 1.19 | 0.59 | |
| 1994-95 | 1.50 | 0.70 | 14th |

स्रोत : डायमेन्सन्स ऑफ डेवलपमेन्टः एग्रीकल्चर, बिहार वाल्यूम–1

विगत दो–तीन दशकों में बिहार तिलहन का महत्वपूर्ण उत्पादक राज्य हो गया है। 1970–71 में यहाँ 1.14 लाख टन तिलहन का उत्पादन हुआ जो 1988–89, 119 लाख टन हो गया। जो करीब 4.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज कराता है । इसी काल में राष्ट्रीय उत्पादन 96.3 लाख टन से बढ़कर 180 3 लाख टन हो गया। यह वृद्धि करीब सत्तासी (87) प्रतिशत है। राष्ट्रीय स्तर पर 1970–71 में राज्य का उत्पादन 1.18 प्रतिशत था जो 1985–89 में घटकर 0. 66 प्रतिशत हो गया। 1970–71 एवं 1982–83 के बीच अधिकतम उत्पादन 1974–75 में दर्ज हुआ जो 1.48 लाख टन था एवं न्यूनतम उत्पादन 1971–72 में 0.94 लाख टन था। जो 36 प्रतिशत (छत्तीस प्रतिशत) के उतार–चढ़ाव को दर्शाता है।

1950–51 में बिहार में अखाद्य फसलों का उत्पादन करीब 22.9 लाख टन था जो 1988–89 में 85.2 लाख टन तक पहुँच गया। इस समयावधि में 3.72 गुणा वृद्धि दर्ज की गई। इसमें प्रमुख फसलें गन्ना, जूट, आलू, तम्बाकू आदि महत्वपूर्ण है। 1950–51 से 1965–66 के बीच इन फसलों की वृद्धि दर 2.80 प्रतिशत थी, जो प्रतिवर्ष 0.69 प्रतिशत है। प्रारंभिक वर्षों में प्रति एकड़ बढ़ाने पर जोर दिया गया जबकि बाद के वर्षों में स्थिति ठीक इसके विपरीत थी। खाद्यान्न

फसलों में वृद्धि के जोर के फलस्वरूप अखाद्यान्न फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि पर कम ध्यान दिया गया। गन्ने का उत्पादन 1950–51 से 1965–66 के बीच प्रतिवर्ष 1.39 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। जबकि 1967–68 एवं 1977–78 के बीच यह नकारात्मक (–0.92 प्रतिशत) रही। प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन में स्थिरता रही, लेकिन क्षेत्रफल विस्तार ने सकारात्मक प्रभाव डाला। सामान्य रूप से उत्पादकता में वृद्धि नकारात्मक ही रही। बाद के वर्षों में यहीं रूझान देखने को मिलता है।

गन्ने के उत्पादन में ह्रास के प्रमुख कारकों में सिंचाई एवं उर्वरकों का समुचित उपयोग नहीं होना हैं साथ ही गन्ने की मूल्य निर्धारक नीति ने इसके उत्पादन को काफी हद तक प्रभावित किया। इसके साथ ही गन्ने की मिलों द्वारा किसानों को समय पर भुगतान नहीं होने के कारण उत्पादन पर काफी हद नकारात्मक प्रभाव डाला। जिसे तालिका 3. 09 में दर्शाया गया है।

**तालिका –8**

**गन्ने का उत्पादन के रूझान**

| वर्ष | उत्पादन लाख/टन | प्रतिशत संपूर्ण भारत में | भारत में स्थान |
|---|---|---|---|
| 1955-56 | 29.19 | 4.80 | |
| 1960-61 | 69.27 | 6.30 | |
| 1961-62 | 62.31 | 6.24 | |
| 1962-63 | 48.01 | 5.20 | |
| 1965-66 | 59.49 | 4.80 | |
| 1970-71 | 62.09 | 4.91 | |
| 1975-76 | 49.07 | 3.49 | 8th |
| 1980-81 | 34.80 | 2.26 | 8th |
| 1986-87 | 37.29 | 2.01 | |
| 1988-89 | 54.83 | 2.68 | |
| 1989-90 | | 3.00 | |
| 1990-91 | 78.11 | 26/3.31 | 9th |
| 1994-95 | 56.71 | 2.11 | 8th |

स्रोत :. डायमेन्सन्स ऑफ डेवलपमेन्टः एग्रीकल्चर वाल्यूम–1 पटना।

1950 के दशक में चम्पारण संपूर्ण राज्य का बाईस प्रतिशत (22 प्रतिशत) एवं सारण उन्नीस प्रतिशत (19 प्रतिशत) गन्ने का उत्पादन करते था जो संपूर्ण राज्य के उत्पादन का करीब इक्तालीस (41 प्रतिशत) था इसके अलावा दरभंगा एवं शाहाबाद नौ दशमलव नौ प्रतिशत (9.9 प्रतिशत), मुजफ्फरपुर सात (7.0) प्रतिशत का उत्पादन करता था। 1955–56 में सर्वप्रमुख पाँच जिले चम्पारण (33.7 प्रतिशत), सारण (15 प्रतिशत), मुजफ्फरपुर (14.7 प्रतिशत), गया (9.6 प्रतिशत) और शाहाबाद (8.6 प्रतिशत) थे जिनका गन्ने के उत्पादन में प्रमुख स्थान था। इस स्थितियों में 1961–62 में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जब चम्पारण (30.4 प्रतिशत), सारण (18.2 प्रतिशत ), दरभंगा (12.1 प्रतिशत), मुजफ्फरपुर (12 प्रतिशत), एवं गया तथा शाहाबाद प्रत्येक 6.3 प्रतिशत का उत्पादन किया। 1982–83 में सर्वोच्च पाँच जिलें पश्चिमी चम्पारण (30.3 प्रतिशत), सीवान (6.5 प्रतिशत) समस्तीपुर (4.4 प्रतिशत) गया (3.8 प्रतिशत) एवं सीतामढी (3.3 प्रतिशत) था जो मुख्य रूप से गन्ने का उत्पादन कर रहे थे। 1989–90 में पूर्वी चम्पारण (10 प्रतिशत) पश्चिमी चम्पारण (45.6 प्रतिशत) ने मिलकर अपनी सर्वोच्च महत्ता बना ली। इसके बाद गोपालगंज का स्थान आता है। जिसका उत्पादन उस दौरान 13.2 प्रतिशत था। इसके अलावा सीवान (5.73 प्रतिशत) एवं सीतामढी (5.64 प्रतिशत) उत्पादन करता था

जूट बिहार का एक प्रमुख नकदी फसल है। 1950–51 में यहाँ 14.47 लाख जूट की गाँठों का उत्पादन हुआ जो 1990–91 में घटकर 11.90 लाख गाँठ हो गया। इस दौरान इसके उत्पादन में अठारह प्रतिशत का ह्रास हुआ। इसी

काल में देश में इसका उत्पादन तैंतीस लाख गाँठ से बढ़कर इक्नायवे लाख गाँठ हो गया। यह बढोत्तरी एक सौ पचहत्तर प्रतिशत थी। 1955–56 में यह 5ण्87 लाख गाँठ, 1960–61 में 7.51 लाख गाँठ, 1965–66 में 7.84 लाख गाँठ एवं 1980–81 में 6.99 लाख गाँठ का उत्पादन हुआ जो राष्ट्रीय उत्पादन का 1950–51 मे 43.7 प्रतिशत, 1961–62 में 19.9 प्रतिशत, 1974–75 में 12.2 प्रतिशत, 1984–85 में 14.5 प्रतिशत एवं 1990–91 में 13.00 प्रतिशत था। 1984–66 एवं 1982–83 के वर्षों में अधिकतम जूट उत्पादन 1979–80 में 9.33 लाख गाँठ एवं 1968–69 में सबसे कम चार लाख गाँठ था जो 57 प्रतिशत उतार–चढाव को प्रदर्शित करता है।

इस काल में छह वर्षों में जूट के उत्पादन में कमी आई एवं बारह वर्षों में वृद्धि दर्ज की गई। जूट उत्पादक राज्यों में छठे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में बिहार का स्थान दूसरा 1974–75 में तीसरा एवं 1990–91 में दूसरा था। 1950–51 से 1965–66 के बीच जूट के उत्पादन में नकारात्मक वृद्धि (–1.37) प्रतिशत हुई। यद्यपि क्षेत्रफल में गिरावट दर्ज नहीं हुई लेकिन उत्पादन में ह्रास हुआ। 1967–68 से 1977–78 के बीच उत्पादन वृद्धि 0.69 प्रतिशत रही जबकि क्षेत्रफल स्थिर रहा। दोनों कालों में काफी उतार–चढ़ाव रहा लेकिन सामान्य रूप से उत्पादन स्थिर रहा। अहलूवालिया द्वारा किये गये सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि उत्पादन में बढोत्तरी मुख्य रूप से प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्धि के फलस्वरूप हुई क्योंकि क्षेत्र में वृद्धि का उत्पादन वृद्धि पर प्रभाव मात्र 0.05 प्रतिशत रहा।जिसे तालिका 9 में दर्शाया गया है :–

**तालिका–9**

**जूट का उत्पादन**

| वर्ष | उत्पादन लाख/टन | प्रतिशत संपूर्ण भारत में | भारत में स्थान |
|---|---|---|---|
| 1950-51 | 14.47 | 43.70 | |
| 1955-56 | 5.87 | 13.87 | |
| 1960-61 | 7.50 | 18.19 | |
| 1962-63 | 12.63 | 19.90 | 2nd |
| 1961-62 | 10.24 | 19.08 | 2nd |
| 1965-66 | 7.84 | 17.52 | |
| 1970-71 | 7.73 | 15.65 | |
| 1975-76 | 6.12 | 13.78 | 3nd |
| 1980-81 | 6.99 | 10.74 | 3nd |
| 1986-87 | 12.60 | 10.74 | |
| 1988-89 | 11.81 | 14.61 | |
| 1989-90 | | 15.33 | |
| 1990-91 | 11.90/1194 | 13.00 | 2nd |
| 1992-93 | 11.99 | 1294/13.4 | |
| 1994-95 | 11.61 | 13.34 | 2nd |

स्रोत :– डायमेन्सन्स ऑफ डेवलेपमेन्टः एग्रीकल्चर बिहार

न्यूनतम समर्थन मूल्य का जूट के उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है लेकिन इसके बाबजूद भी बिहार में जूट जो जूट कारपोरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा आपूर्ति किया जाता था उसमें काफी बड़ी गिरावट दर्ज हुई। जो अन्य प्रमुख उत्पादक राज्यों की तुलना में नकारात्मकता को दर्शाती है। दूसरी ओर, यहाँ व्यापारिक फसल के रूप में इसका महत्व कम होने लगा क्योंकि किसान जूट की तुलना में खाद्यान्न फसलों की खेती को ज्यादा लाभकारी मानने लगे। उत्पादन में ह्रास का एक महत्वपूर्ण कारण रासायनिक खादों के उपयोग का कम होना भी रहा है। अन्य कारकों में किसानों को मिलने वाली सुविधाओं में कमी एवं बाजार की अस्थिरता ने भी उत्पादन को काफी प्रभावित किया। तम्बाकू बिहार का एक प्रमुख नकदी फसल है। 1986–87 से 1992–93 के बीच इसके उत्पादन में लगातार वृद्धि होती रही है। 1971–86

के बीच इसके क्षेत्रफल में अस्थिरता बनी रही जब इसके अर्न्तगत बारह से तेरह हजार हेक्टेयर कृषि जोत उपलब्ध था। 1971–93 के मध्य का रूझान सकारात्मक था जब प्रति वर्ष उत्पादन में 0.98 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई। इस काल के बाद के वर्षों में वृद्धि का रूझान रहा। जो 0.98 प्रतिशत प्रति वर्ष था। यह वृद्धि 1.37 प्रतिशत तक हुई। ठीक इसके विपरीत प्रारंम्भिक वर्षों में वृद्धि नकारात्मक रही जो –0.36 प्रतिशत प्रतिवर्ष था। वृद्धि का यह रूझान अन्य राज्यों यथा आन्ध्रप्रदेश एवं गुजरात की तुलना में बेहतर था।

बिहार में तम्बाकू उत्पादन के महत्वपूर्ण क्षेत्र अथवा जिलों में गंगा के मैदानी इलाकों के उत्तरी–पश्चिमी भाग हैं जो संपूर्ण क्षेत्रफल का करीब तिरानवे प्रतिशत (93 प्रतिशत) है। सबसे महत्वपूर्ण जिलें समस्तीपुर एवं वैशाली थे जहाँ राज्य के संपूर्ण कृषि जोतों का करीब चालीस प्रतिशत भाग था। यथा वैशाली में करीब अड़तालीस प्रतिशत (48 प्रतिशत) एवं समस्तीपुर में करीब बत्तीस प्रतिशत (32 प्रतिशत) भू–भाग इसके अर्न्तगत था। अन्य महत्वपूर्ण जिलों में मुजफ्फरपुर (8.38 प्रतिशत), गोपालगंज (1.09 प्रतिशत), एवं उत्तरी–पश्चिमी मैदानी भाग में पूर्णिया (4.15 प्रतिशत), बेगूसराय (1.21 प्रतिशत) था। 1977–91 के बीच वृद्धि का रूझान उत्तरी–पश्चिमी मैदानी भागों में 2.42 प्रतिशत था। जो सकारात्मक था एवं दूसरी ओर पूर्वी मैदानी भागों में यह नकारात्मक था (–3.18 प्रतिशत)। बिहार में प्रति एकड़ तम्बाकू का उत्पादन उत्साहवर्धक था। 1970–71 में यह उत्पादन 890 किलोग्राम/हेक्टेयर था। सबसे अधिक उत्पादन 1270 किलोग्राम/हेक्टेयर 1987–1988 में दर्ज हुआ। बाद के वर्षों में 1992–93 तक उत्पादन में लगातार ह्रास देखने को मिलता है जो इस वर्ष मात्र 570 किलोग्राम/ हेक्टेयर के स्तर पर पहुँच गया। 1970–1993 के बीच प्रति हेक्टेयर उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि (1.03 प्रति वर्ष) रही। यहाँ प्रति हेक्टेयर उत्पादन राष्ट्रीय औसत से काफी कम रहा है। एक ओर जहाँ राष्ट्रीय औसत उत्पादन 1370 किलोग्राम/हेक्टेयर आन्ध्रप्रदेश 3640 किलोग्राम/हेक्टेयर (1990–93 के आँकडों के अनुसार) जबकि बिहार में मात्र यह 650 किलोग्राम/हेक्टेयर रहा। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर इसमें वृद्धि 4980 के दशक में सकारात्मक रही।

यह तथ्य निःसंदेह रूप से सही है कि बिहार में 1960 के दशक के पश्चात् से कृषिगत ढ़ाँचे में संस्थागत सुधार होने शुरू हुये। मुख्य रूप से हरित क्रान्ति का तीव्र प्रभाव बिहार पर नहीं पड़ा वरन् उत्पादन में वृद्धि अवश्य दर्ज हुई। सिंचाई की सुविधा के विस्तार के साथ–साथ रासायनिक एवं जैविक उर्वरकों के उपयोग में वृद्धि दर्ज हुई, हाइब्रिड बीजों का उपयोग बड़े पैमाने पर शुरू हुआ एवं कृषिगत ढाँचाओं को सुदृढ़ बनाने हेतु साख संस्थाओं का ग्रामीण इलाकों तक विस्तार हुआ।

विगत चार पाँच दशकों के दरम्यान कृषि उत्पादन में वृद्धि पर सबसे अधिक प्रभाव रासायनिक उर्वरकों के लगातार बढ़ते उपयोग का रहा है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि कृषि उत्पादन की प्रक्रिया में उर्वरकों के अलावा अन्य कारकों जैसे कि सिंचाई, हाइब्रिड बीजों का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है लेकिन उपरोक्त कारकों के साथ उर्वरकों का समन्वय एक महत्वपूर्ण कारक रहा है।

बिहार में कृषि उत्पादन की वृद्धि में सिंचाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ 1976.76 में 28.74 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध थी जो 1990–91 में बढ़कर 33.50 लाख हेक्टेयर हो गया यानि पंद्रह वर्षों में 11.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। 1990–91 में शुद्ध बोये गये क्षेत्र के 42.85 भाग में सिंचाई की सुविधा प्राप्त थी जो कि तत्कालीन पंजाब में 93.5 प्रतिशत, हरियाणा में 76.05 प्रतिशत एवं उत्तरप्रदेश में 60.92 प्रतिशत था। जहाँ तक विभिन्न स्रोतों से सिंचाई का सवाल है इसमें पंप सेट का योगदान बयालीस (42) प्रतिशत, नहरों का तैंतीस (33) प्रतिशत एवं शेष कुँओं, आहट, पाइन, जलाशयों द्वारा पूर्ण होता था।

बिहार में हाइब्रिड बीजों का उपयोग खाद्यान्न उत्पादन में गेहूँ, चावल एवं मक्के की फसल में अधिकाधिक हुआ। सन् 1979–80 में कुल चावल के बोये गये क्षेत्रफल में 20.31 प्रतिशत भूमि पर हाइब्रिड बीजों का उपयोग हुआ जो

1990–91 में बढ़कर 33.86 प्रतिशत हो गया। कुल मिलाकर इस दौरान हाइब्रिड बीजों के उपयोग में सालाना वृद्धि 4.05 प्रतिशत की रही। इसी दौरान शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल में हाइब्रिड बीजों का कुल क्षेत्रफल 10.36 लाख हेक्टेयर (1977–78) से बढ़कर 16.67 लाख हेक्टेयर तक पहुँच गया (1990–91) जो इन वर्षों में कुल हाइब्रिड बीजों के उपयोग में 60.90 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करता है। इस प्रकार इस दौरान सालाना वृद्धि का आकलन करें तो यह वृद्धि 4.02 प्रतिशत की सालाना वृद्धि को प्रदर्शित करता है। आँकड़े का तुलनात्मक अध्ययन अगर विभिन्न राज्यों से किया जाय तो यह प्रभावशाली प्रतीत नहीं होता है। जहाँ तक पंजाब का सवाल है वहाँ कुल धान के उत्पादन में हाइब्रिड बीजों का प्रतिशत 94.17 था वहीं उत्तर प्रदेश में यह 87.04 प्रतिशत, 56.03 प्रतिशत पश्चिम बंगाल में 95.03 प्रतिशत तमिलनाडु में, 90.04 प्रतिशत आन्ध्रप्रदेश में एवं 64.31 प्रतिशत संपूर्ण भारत में रहा। वहीं बिहार में हाइब्रिड बीजों के उपयोग का प्रतिशत 1990–91 में 33.86 ही रहा।

बिहार में कृषिगत संस्थाओं के विस्तार एवं संस्थागत सुधारों को लागू करने हेतु सेन समीति ने 1982 में लंबे समय एवं कम समय में जरूरी कृषिगत साख के लगभग 1505 करोड़ को सप्तम् पंचवर्षीय योजना एवं 1870 करोड़ अष्टम् पंचवर्षीय योजना के लिए निर्धारित किया। बिहार सरकार के द्वारा टास्कफोर्स के गठन (1993–94) के बीच यह राशि 720 करोड़ थी। अगर कृषिगत ढ़ाँचे में बदलाव एवं कृषि की जरूरतों को पूरा करने हेतु साख समीतियों द्वारा मुहैया कराये गयी पूँजी काफी कम रही। सेन समिति की सिफारिशों के अनुसार सप्तम् पंचवर्षीय योजना के अर्न्तगत 2,172 करोड़ की पूँजी की आवश्यकता पड़ी वहीं केवल 1068.7 करोड़ रूपये ही वास्तव में कृषि क्षेत्र को उपलब्ध कराये गये। 1991–92 एवं 1992–93 में कुल संस्थागत वित्त लगभग 214.3 करोड रूपये तथा 195.7 करोड रूपये ही थे। कुल मिलाकर सेन समीति की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए भी सरकार ने कृषि क्षेत्र को केवल एक चौथाई ही ऋण प्रदान किये। वित्त संबंधी प्रावधानों के तहत 1986 में 298.5 करोड़ रूपये आवंटित किये गये, वहीं 1988–89 में 524. करोड़ रूपये आवंटित हुए जो 1992–93 में यह वित्त संपोषण घटकर 289.5 करोड़ रूपये तक पहुँच गया। 1977 से लेकर 1992–93 के बीच वित्त संपोषण स्थिर नहीं रही वरन् यह वर्ष–प्रतिवर्ष बदलती रही एवं सेन समीति की अनुसंशा को पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सका। उपरोक्त तथ्यों से यह परिलक्षित है कि हरित क्रान्ति के विभिन्न अवयवों का सही रूप से उपयोग बिहार में नहीं हो पाया जिसके कारण खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

## संदर्भ–सूची


**[1]** ''स्टेट्स ऑफ एग्रीकल्चर इन बिहार'', एग्रीकल्चर सेंसेस डिविजन, मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर, न्यू दिल्ली, 2006

**[2]** टी0 एन0 झा, के0 बी0 विश्वनाथन ''प्रॉब्लेम्स एड प्रॉस्पेक्ट्स ऑफ एग्रीकल्चरल डेवलेपमेन्ट इन बिहार,'' नार्बाड, 1999

**[3]** जगदीश प्रसाद, ''बिहार डायनॉमिक्स ऑफ डेवलपमेन्ट'' मित्तल प्रकाशन दिल्ली पृ0–165–180

**[4]** एस0 एस0 भाटिया, ''पैटर्न ऑफ क्रॉप कन्सेन्ट्रेशन एण्ड डायवर्सिफिकेशन इन इंडिया'',इकोनोमिक ज्योग्रॉफी – 39, न्यू दिल्ली, पृ0 39–65

**[5]** माजिद हुसैन, ''सिस्टेमेटिक एग्रीकल्चरल ज्योग्रॉफी'', न्यू दिल्ली, 1997, पृ0 134–165

**[6]** केदारनाथ प्रसाद, ''डायनामिक्स ऑफ डेवलपमेट एग्रीकल्चर इन बिहार'', गूगल बुक्स, इण्डिया, पृ0 62–65

**[7]** जोशी, पी0के0 त्रिपाठी, गौरव एवं गौतम मधुर ''ट्रान्सफारमिंग बिहार एग्रीकल्चर, चैलेजेज एण्ड अपौरचुनीटीज''।

**[8]** टी0 एन0 झा एवं के0 वी0 विश्नाथन, ''प्राब्लेम्स एण्ड प्रोस्पेक्टस ऑफ एग्रीकल्चरल डेवलपमेन्ट इन बिहार'', ओकेजनल पेपर न0–10 नार्बाड, 1999, पृ0 147–156 ।